

spotlight plus नए सत्र के लिए एडमिशन की प्रक्रिया शुरू

अब नैक ग्रेडिंग से कॉलेज हो रहे सर्च, क्वालिटी एजुकेशन पर फोकस

न्यू एजुकेशन पॉलिसी में नैक ग्रेडिंग को माना जरूरी

त्रिका plus रिपोर्ट

जयपुर. शहर के कॉलेज और निवर्सिटीज में नए सत्र में एडमिशन के लेकर पैंटेंस और स्टूडेंट्स की शक्कत शुरू हो गई है। सभी अपने अनुसार विभिन्न मापदंडों पर खरातरने वाले शिक्षण संस्थान की तलाश में जुटे हैं।

कुछ प्लेसमेंट को लेकर त्रिवायरी कर रहे हैं, तो कुछ बेहतर इन्फ्रास्ट्रक्चर एवं फैकल्टीज पर भी फोकस कर रहे हैं। इन सबके बीच जीसी की क्वालिटी एजुकेशन मेंटेन करने के लिए बनाई गई ऑटोनोमस ग्रेडिंग 'नैक' की ग्रेडिंग भी स्टूडेंट्स की क्वालिटी शिक्षण संस्थान की खोज में त्रासी मददगार साबित हो रही है। बड़ी संख्या में ऐसे पैंटेंस भी हैं, जो सिर्फ एक एक्रिडेशन को ही आधार बनाकर शिक्षण संस्थान के चयन में लगे हैं।

न मापदंडों पर मिलती ग्रेड

एक्रिडेशन एजुकेशन, रिसर्च, फैकल्टी, इन्फ्रास्ट्रक्चर, प्लेसमेंट आदि का आधार पर मिलती है। एक्रिडेशन की ग्रेड स्टूडेंट्स को शिक्षण संस्थान की क्वालिटी के बारे में जानकारी देती है। शिक्षण संस्थान को सात असेसमेंट क्राइटेरिया के अंतर्गत परखा जाता है। इनमें करिकुलम, टीचिंग-लर्निंग एंड वेल्युएशन, रिसर्च-इनोवेशन एंड एक्सपोजर, इन्फ्रास्ट्रक्चर एंड लर्निंग



फाइल फोटो

एनईपी ने किया अनिवार्य

नैक (नेशनल असेसमेंट एंड एक्रिडेशन काउंसिल), यूजीसी की एक स्वायत्त संस्था है। जिसकी स्थापना देश में उच्च शिक्षा में क्वालिटी पॉलिसी को सुदृढ़ करने एवं बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। नैक की मान्यता प्राप्त होने के बाद स्टूडेंट्स को विभिन्न शिक्षण संस्थानों का एकेडमिक और रिसर्च एक्सपोजर जानने में आसानी मिलती है, ऐसे में वे अपने लिए उपयुक्त एवं बेहतर संस्थान का

चयन कर सकते हैं। न्यू एजुकेशन पॉलिसी (एनईपी) में सभी शिक्षण संस्थानों के लिए नैक की मान्यता अनिवार्य होने के बाद संस्थाओं में इसकी प्रक्रिया को पूरा करने का काम जोर-शोर से चल रहा है। पहले नैक एक्रिडेशन सिर्फ यूनिवर्सिटीज के लिए ही आवश्यक था, ऐसे में नई नीति के बाद अब सभी शिक्षण संस्थाओं के लिए इसकी मान्यता प्राप्त करने के लिए विभिन्न मापदंडों पर खरा उतरना पड़ेगा।

नैक एक्रिडेशन किसी भी शिक्षण संस्थान के लिए उसकी श्रेष्ठता का परिचायक है। इसे सीधे शब्दों में आप एक क्वालिटी स्टैम्प मान सकते हैं। एनईपी में तो ये अनिवार्य किया जा रहा है। बच्चों को एडमिशन लेने में आसानी रहती है।

सन्नी कपूर, शिक्षाविद

55 हजार उच्च शिक्षण संस्थान हैं देशभर में
30 मार्च 2022 तक सिर्फ 9 हजार संस्थानों ने ही नैक विजिट करवाई है
02 हजार शिक्षण संस्थानों को ही 'ए' या इससे ऊपर की ग्रेड प्राप्त है

शिक्षण श्रेष्ठता को साबित करने का मौका

जेके लक्ष्मीपत यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो. धीरज सांघी ने बताया कि पहले अटेम्प्ट में ही नैक विजिट के बाद 'ए' ग्रेड प्राप्त हुई है। किसी भी शिक्षण संस्थान की क्वालिटी एजुकेशन के मूल्यांकन के लिए नैक सबसे बेहतर विकल्प है। यहां से स्टूडेंट्स यूनिवर्सिटी की वर्किंग को समझ सकते हैं और अचीवमेंट्स को जान सकते हैं। जीसीईसी की प्रिंसिपल शिवी सक्सेना ने बताया कि इसमें शिक्षा से जुड़े सभी मापदंडों पर शिक्षण संस्थानों को परखा जाता है, इसके बाद ही ग्रेड अलॉट होती है। नैक विजिट के दौरान कॉलेज को अपनी शिक्षण श्रेष्ठता साबित करने का मौका मिलता है।

अंकों के आधार पर बनती है ग्रेड

नैक की ओर से सभी क्राइटेरिया में प्राप्तांक को कुल 4 अंकों में विभाजित किया जाता है। इसमें 3.5 से अधिक अंक होने पर 'ए

प्लस प्लस', 3.26 से अधिक अंक पर 'ए प्लस', 3.01 से अधिक पर 'ए', 2.76 से अधिक अंक होने पर 'बी प्लस प्लस' मिलती है। इसी

प्रकार अंक कम होने पर ग्रेड भी गिरती जाती है। ये ग्रेड पांच साल के लिए दी जाती है, जिसकी रिपोर्ट हर साल देनी होती है।

रिसोर्सिंग, स्टूडेंट सपोर्ट एंड प्रोग्रेसन, गवर्नेंस-लीडरशिप एंड मैनेजमेंट और इंस्टीट्यूशनल वेल्युज एंड प्रेक्टिसेस प्रमुख होते हैं। इन क्राइटेरिया के बीच करीब 100 से अधिक मापदंडों पर शिक्षण संस्थानों को परखा जाता है।